जगत जननी माँ जानकी जन्मभूमि सीतामढ़ी

श्री विनोद कुमार झा

भारत के बिहार राज्यान्तर्गत तिरहुत कमिश्नरी के सीतामढ़ी जिले का 'जानकी जन्मभूमि' वह पवित्र स्थल है जिसे, जगत जननी माँ सीता ने अपनी प्राकट्यस्थली के रूप में चयनित किया था। सीतामढ़ी जिला हिमालय पर्वत श्रृंखला की तराई में भारत-नेपाल सीमा पर अवस्थित है। वर्तमान समय में सीतामढ़ी 26.6° उत्तर और 85.48° पूर्व में स्थित है।इसका क्षेत्रफल 2294 वर्ग किमी तथा नेपाल से लगनेवाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा की कुल लंबाई 90 किमी है और यहाँ से जनकपुर 52 किमी है। इस जिले में 835 गाँव, 273 ग्राम पंचायत, 17 प्रखंड एवं 3 अनुमंडल है।

माँ सीता की भूमि से उत्पति की रोचक कथा तथा पुनः भूमि प्रवेश की करुण गाथा, सीतामढ़ी के जन-जन को ज्ञात हैयहाँ के लोग उन्हें माँ, पुत्री, बहन तथा आराध्या के रूप में मानते हैं। माँ सीता को भूमिजा, उर्विजा, वैदेही, जानकी, जनकनन्दनी आदि नामों से पुकारा जाता है। लोग उन्हें साक्षात शक्ति स्वरुपा माँ जगदम्बा के रूप में पूजते हैं। बहुत सारे विद्वत जन इस कथा का वर्णन कर चुके हैं। मुझ जैसे अल्पज्ञ का इसपर कुछ भी लिखना कथा की पुनरावृत्ति मात्र मानी जाएगी।

वैदिक कालीन अथर्ववेद से निःसृत "माधव मोरुतंत्र" ग्रन्थ में भारत के परिचय में लिखा है-

"हिमालस्य समारभ्यं, यावद् इन्दु सरोवरम्।
तदैव निर्मितं देशम्, हिन्दुस्थानम् प्रचक्ष्यते"।।

प्राचीन पौराणिक ग्रंथों के अनुसार आर्य सभ्यता के प्रधान पुरुष इक्ष्वाकु वंशीय राजा विदेह माधव ने गंडकी नदी के पूरब कोशी नदी के तट पर 'विदेह' राज्य की स्थापना की थी। बाद में उसी वंश के राजा 'निमि' के पुत्र 'मिथि' के नाम पर इस राज्य का नाम 'मिथिला' पड़ा। सीतामढ़ी उसी मिथिलाक्षेत्र के अंतर्गत का भूभाग था। 'निमि' के बाद के उत्तराधिकारी 'जनक' कहलाए। जनता का जन्म देनेवाले पिता के समान पालन करने के कारण इन्हें जनक' कहा गया। राम के ससुर 'शिरध्वज' 37वें जनक थे। उनके भाई का नाम 'मोरध्वज' था। शिरध्वज के राज्य की राजधानी जनकपुर नेपाल में थी।

माँ जानकी की उत्पत्ति के सम्बंध में 'विष्णु पुराण' में लिखा है:- बारह वर्षों की अनावृष्टि के कारण राजा जनक 'शिरध्वज' के समय भारी उकाल पड़ गया। जमीन बंजर होने लगी, राज्य खजाना खाली हो गया, जनता त्राहि-त्राहि कर उठी। इस अकाल की स्थिति से त्राण पाने हेतु राजा जनक ने विद्वानों, ऋषियों, तपस्वियों की सभा बुलाकर उनसे मंत्रणा की।

"यज्ञात् पर्जन्यः भवति" की मान्यता के अनुसार विद्वानों एवं ऋषियों ने राजा जनक को "हलेष्टि यज्ञ" करने की सलाह दी। बृहद् विष्णु पुराण में श्लोक लिखा है:- "दुगात् पश्चिमतो भागे योजनात् त्रितयात्परम् यज्ञास्थानं नरेन्द्रस्य यज्ञलाङल्य पद्धतो।। समुत्पन्ना महाभागो सीताराघव बल्लभा" ।।

अर्थात राजा जनक के किला के पश्चिमोत्तर भाग, जलेश्वर स्थान से तीन योजन (12 कोस) की दूरी पर हलेश्वर स्थान में यज्ञ किया गया। वही हलेश्वर स्थान में भगवान शिव को प्रतिस्थापित कर 'हलेष्टि यज्ञ' किया गया। लक्ष्मणा नदी के तर पर यज्ञ सम्पादन की बात बताई जाती है। हलेश्वर स्थान से हलकर्षण करते हुए जब राजा जनक पुनौरा पहुँचे तो उनके अग्रभाग से

एक मृदापात्र (मिट्टी का घड़ा) टकराया। इसी मृदापात्र से माँ सीता का प्राकट्य हुआ। चूंकि हल के अग्र भाग को 'सीता' कहते हैं इसीलिए कन्या का नामकरण 'सीता' हुआ। भूमि सुता सीता के धराधाम पर अवतीर्ण होते ही मूसलाधार वर्षा होने लगी। उसी वर्षा से सीता को बचाने के लिए राजाज्ञा से एक मड़ई (कुटी,झोपड़ी) तैयार की गई। कहा जाता है इसी नाम से सीता मड़ई फिर सीतामही और सीतामढ़ी नाम पड़ा।

सीता जन्मभूमि की चतुर्दिक सीमा के संबंध में 'वृहद् विष्णु पुराण' के श्लोक सं०- 5 में लिखा है:-

"आस्ते चक्रो मुनिःपूर्वे दक्षिणे खड्ग संज्ञक:
पश्चिमे पुण्डरीकस्तु कौवेर्या च हरेश्वर:।।"

पुनः सीता जन्मभूमि के संबंध में मिथिला की एक उक्ति भी है:-

"आसीद यस्याः प्रथित सुमशाः प्राचिचक्रो मुनीन्द्रः
याभ्ये खड्ग प्रखर सुतपाः पश्चिमें पुण्डरिकः
कौबेरे श्री कपिल विदितः पूर्वतो लक्ष्मणाभ्या।
गंगा सैषा जयति सुभग जानकी जन्मभूमिः।।"

अर्थात जानकी जन्मभूमि के पूरब दिशा में मुनिश्रेष्ठ चक्र, दक्षिण में खड्ग ऋषि,पश्चिम में पुण्डरीक ऋषि, उत्तर में कपिलमुनि (साइंसशास्त्र के प्रणेता) का आश्रम तथा पूरब में लक्ष्मणा नदी।

कहा जाता है राजा जनक ने एक बार सूर्यग्रहण के उपरान्त पुण्डरीक ऋषि को एक वन दान में दिया था। वह स्थान सीतामढ़ी शहर से 3 कि.मी. पश्चिम था जहाँ पुण्डरीक ऋषि का आश्रम बनाया गया– कालान्तर में वही 'पुण्यारण्य' आज का पुनौरा धाम बन गया ।

एक अन्य विद्वान का मत है पुण्य स्वरूपा जनक सुता के प्रादुर्भाव से जो भूमि उर्वरत्व को प्राप्त हुई वही 'पुण्योर्वरा' कालान्तर में पुनौरा के नाम से जानी गई। उसी तरह चक्र ऋषि के नाम पर चक महिला, खड्ग ऋषि के नाम पर खड्का, पुण्डरीक के नाम पर पुनौरा तथा कापेल मुनि के नाम पर कपरौल गाँव का नाम प्रचलित है।

जानकी स्थान मंदिर परिसर में स्थित 'उर्विजा कुण्ड' की चर्चा भी बृहद विष्णु पुराण में निम्नप्रकार की गई है:-

"यत्र सिंहासीना सखीभि: पारिवारिता।
आविर्वभूव वैदेही तदुक्तं उर्विजा सर:।।"

मुजफ्फरपुर जिला गजेटियर बिहार सरकार के टूरिज्म विभाग द्वारा प्रकाशित पुरानी पुस्तक, पौराणिक ग्रंथों एवं मान्यताओं के अनुसार माँ सीता के विवाह के पश्चात् राजा जनक माता जानकी के वियोग में पुनः सीतामढ़ी आए तथा माता जानकी की जन्मस्थली पर बेशकीमती काले पवित्र शालियाम पत्थर से बनी राम, सीता, लक्ष्मण एवं हनुमान की प्रतिमा को प्रतिस्थापित किया। करीब 500 वर्ष पूर्व 15 वीं शदी में अयोध्या के एक संयासी संत हीराराम दास अयोध्या से जानकी जन्म भूमि की खोज में दरभंगा होते हुए इस क्षेत्र में पहुँचे थे। उस समय यहाँ घनघोर जंगल था तथा यह क्षेत्र 'सुलक्षिणी' के नाम से विख्यात था। कहा जाता है स्वप्ने के निर्देश एवं सर्प के मार्गदर्शन में हीराराम दासजी ने खुदाई करवाई थी तथा तद्नुसार वहाँ से प्राप्त प्रतिमा को मंदिर बनाकर स्थापित किया था। वही अद्भूत प्रतिमा रजतद्वार शक्तिपिढ जानकी मंदिर जानकी स्थान सीतामढ़ी में अवस्थित है। कालांतर में रामजानकी दरबार के प्रांगण में हनुमान, गणेश, महादेव का मंदिर बनाया गया। इसी प्रांगण में संत हीराराम दास तथा मार्गदर्शक सर्प की समाधि बनी हुई है। जानकी मंदिर के दक्षिण "उर्विजा कुंड" है जिसमें सीता उद्भव की

प्रतिमा स्थापित की गई है, उसी कुंड की खुदाई से प्रतिमा मिली थी । कहा जाता है तुलसीदासजी के संकेत पर तत्कालीन दरभंगा नरेश ने हीरारामदासजी को सुलक्षिणी क्षेत्र प्रदान किया था।

गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित श्री रामचरित मानस के अनुसार रामायण काल में सीतामढ़ी तथा पुनौरा में घनघोर जंगल था। जानकी स्थान महंत के प्रथम पूर्वज विरक्त महात्मा एवं सिद्ध पुरुष थे। उन्होंने बृहद विष्णु पुराण के अनुसार जनकपुर नेपाल से मापकर वर्त्तमान जानकी स्थान वाली जगह को ही राजा जनक की हल कर्षण भूमि बताई। उसी स्थान पर एक वृक्ष के नीचे लक्ष्मण नदी के तट पर तपश्चर्या हेतु आसन जमाया। पश्चात् काल में भक्तों ने वहाँ मठ बनवाया जो गुरु परंपरा के अनुसार उस काल के क्रमागत शिष्यों के अधीन आधपर्यंत चला आ रहा है। वही मठ आज का रजतद्वार शक्तिपीठ जानकी मंदिर है जो जानकी स्थान के नाम से प्रसिद्ध है। यह स्थान सीतामढ़ी रेलवे स्टेशन से डेढ़ कि. मी. पश्चिम स्थित है।

जानकी स्थान से लगभग डेढ़ कि. मी. पश्चिम में पुनौरा स्थित जानकी मंदिर है जिसे पुनौरा धाम कहा जाता है। सीतामढ़ी से 3 कि. मी. उत्तर हलेश्वर स्थान है जहाँ 'हलेष्टि यज्ञ' हुआ था। सीतामढ़ी से 8 कि. मी. की दूरी पर पंथपाकड़ है जहाँ बहुत पुराना पाकड़ का पेड़ है जिसे रामायण काल का मन जाता है। ऐसी मान्यता है कि सीताजी को जनकपुर से अयोध्या ले जाने के समय उनकी डोली विश्राम के लिए यही पर रखी गई थी। वहाँ आज भी एक तालाब है जहाँ सीताजी की आचमन की बात कही जाती है। सीतामढ़ी से पूरब 401 कि. मी. की दूरी पर अहिल्या स्थान है जो, दरभंगा जिले में है। यहाँ गौतम ऋषि का आश्रम था। जहाँ श्रीराम ने धनुष यज्ञ में जनकपुर जाते हुए अहिल्या का उद्धार किया था।इससे भी प्रमाणित होता है कि सीतामढ़ी त्रेतायुगीन नगर था।

प्राचीन काल में सीतामढ़ी "त्रिभुक्ति" क्षेत्र में पड़ता था जो मिथिला राज्य के अन्तर्गत था। वही "त्रिभुक्ति"वर्त्तमान तिरहुत है तथा इस क्षेत्र की कमिश्नरी का नाम तिरहुत कमिश्नरी है। इस क्षेत्र में मुस्लिम शासन आरम्भ होने तक मिथिला के शासकों कर्णाट वंश ने शासन किया। बाद में स्थानीय क्षत्रपों ने यहाँ अपनी प्रभुता कायम कर ली। लेकिन अंग्रेजो के आने पर यह पहले बंगाल फिर बिहार प्रान्त का हिस्सा बना। 1908 ई. से तिरहुत मुजफ्फरपुर का हिस्सा बना हुआ है। 11 दिसम्बर 1972 को सीतामढ़ी जिला बन चुका है।

सीतामढ़ी में प्रतिवर्ष चैत्र रामनवमी को श्रीराम का जन्मोत्सव तथा अगहन विवाह पंचमी को राम-सीता विवाहोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है जिसे देखने दूर दूर से लोग आते हैं। इन दोनों ही अवसरों पर पूरा सीतामढ़ी उत्सवी माहौल में डूबा रहता है। विवाह पंचमी में राम-सीता विवाह की भव्य एवं जीवंत झाँकी निकाली जाती है तथा पूरे विधि-विधान से विवाहोत्सव का कार्यक्रम सम्पन्न किया जाता है। अयोध्या से राम की बारात सीतामढ़ी आती है तथा यहाँ से होकर जनकपुर जाती है। सीतामढ़ी में चैत्र रामनवमी एवं अगहन विवाह पंचमी के अवसर पर सदियों से मेला का आयोजन होते रहा है। सीतामढ़ी का चैत्र रामनवमी मेला पूरे भारत में प्रसिद्ध रहा है तथा विभिन्न प्रान्तों के व्यापारी मेला में भाग लेने आते रहे हैं। यहाँ का बैल बाजार, घोड़ा बाजार एवं हाथी बाजार प्रसिद्ध रहा है। सालों भर यहाँ देश एवं विदेश के सैलानी माँ जानकी के दर्शनार्थ आता रहते हैं।

जानकी जन्मभूमि के विकास में सीतामढ़ी के पूर्व समाहर्ता अरुणभूषण जी का योगदान सराहनीय रहा है। उन्होंने पुनौरा मंदिर जीर्णोद्धार करवाया, विशाल द्वार का निर्माण करवाया, मंदिर परिसर में स्थित पोखरे का सौन्दर्यीकरण, घाट निर्माण तथा उसके किनारे पार्क निर्माण के साथ 2 अतिथिगृह का निर्माण करवाया। हलेश्वर स्थान के परिसर का नापी करवाकर अतिक्रमण मुक्त करवाया, हलेश्वर महादेव तथा माँ पार्वती का भव्य मंदिर निर्माण करवाया, विशालद्वार बनवाया तथा वहाँ

अतिथिगृह निर्माण करवाया। प्रसिद्ध कथावाचक एवं प्रवचनकर्त्ता रामभद्राचार्य जी प्रतिवर्ष पुनौरा धाम आते हैं तथा सप्ताह भर कथा एवं प्रवचन करते हैं। वे कहते हैं- "मैं सीता के नैहर में आता हूँ।" बिहार धार्मिक न्यासबोर्ड के अध्यक्ष भूतपूर्व आई. पी. एस. कुणाल साहब पुनौरा धाम में 'सीता रसोई' की व्यवस्था करवाये हुए हैं, जहाँ साधू-संतों एवं तिथियों को भोजन करवाया जाता है। जानकी जन्मभूमि पर्यटक विकास समिति के कार्यकर्त्ता अहर्निश इसके विकाश विकास में जुटे रहते हैं। पुनौरा धाम मंदिर से 5-7 कि.मी. पश्चिम बखरी में 251 फीट की माँ सीता की प्रतिमा बनाने की योजना प्रस्तावित है, जिसके लिए भूमि की व्यवस्था की जा चुकी है। सरकार द्वारा सीतामढ़ी को अयोध्या से रामायण सर्किट से जोड़ने की बात चल रही है साथ ही, इसे रेलमार्ग से भी अयोध्या से जोड़ने का प्रयास जारी है। 13 दिसम्बर 2023 को बिहार के माननीय मुख्यमंत्री नीतिश कुमार जी द्वारा पुनौरा धाम के विकास के लिए 72 करोड़ की योजना का शिलान्यास किया गया है।

जानकी जन्मभूमि सीतामढ़ी के विकास के लिए इससे जुड़े कार्यकर्त्ता, मंदिर के महंत, साधू-संत, राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता, विधायक, सांसद, बिहार सरकार एवं केंद्र सरकार सभी प्रयत्नशील हैं। सीतामढ़ी के आमजनों की यही आशा, अभिलासा एवं आकांक्षा है कि जानकी जन्मभूमि सीतामढ़ी राम जन्मभूमि अयोध्या की तरह विकसित होकर विश्व मानचित्र पर आए।

_____

सेवानिवृत प्रधानाध्यापक